International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 564-566

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 564-566
www.allresearchjournal.com
Received: 03-11-2015
Accepted: 06-12-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि.प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि.प्र.

नाथसम्प्रदाय–एक विवेचन

डॉ. शिवदत्त शर्मा

भारतीय दर्शन की दीर्घ परम्परा है। समयसमय पर अनेक दर्शनएवं सम्प्रदायो तथा धर्मों ने इसमें आदान–प्रदान किया। साम्प्रदायिक दर्शन में सिद्धों एवं नाथों ने भी महत्व पूर्ण भूमिका निभाई तथा अनेक अच्छी चीजों को पूर्ववर्ती दर्शन से ग्रहण कर उसे आगे बढाया तथा अनेक नए दृष्टिकोण अपनी ओर से इस परम्परा में जोड दिए।

सिद्धों का अस्तित्व आठवीं सदी के आसपास निर्विवादित है, तथा उसी के आसपास नाथों का अस्तित्व सम्भव है। यह इसलिए भी उचित लगता है क्योंकि दोनों सम्प्रदायों में अनेक बिन्दु समान हैं। राहुल सांकृत्यायन ने नाथपंथ को सिद्धपरम्परा का ही एक विकसित रूप माना हैं अनेक विद्वान वज्रयानी सिद्धों के वामाचार के विरोध उठे नए सम्प्रदाय को नाथ सम्प्रदाय कहते हैं। 1 वास्तव में सिद्ध मत और नाथपंथ दोनों की अलग अलग विचार धारा होते हुए भी एक दूसरे से सम्पृक्त हैं। दोनों पंथों में योग–साधना को अपनाया गया है। अनेक साधक दोनों पंथों में समान नाम से हैं। इस तरह यह धारणा बलवती बनती है कि वज्रयान शाखा में सिद्धों की तंत्र साधना में बढते मद्य मैथुन के प्रयोग से कुछ साधकों ने अलग सम्प्रदाय बना लिया होगा। परन्तु इस विचार के विरोध में यह अकाट्य प्रमाण है कि नाथसम्प्रदाय में मूलचेतना शैव दर्शन पर आधारित है,इस सम्प्रदाय के लोग शिव की ही आराधना करते हैं।दूसरी बात यह है कि सिद्ध सम्प्रदाय जहां अन्तर्मुखी –योगसाधना पर बल देता है, वहीं नाथ सम्प्रदाय में हठ–योग को अपनाया गया है। सिद्धमत और नाथ मत की घनिष्ठता को ही देखकर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने स्पष्ट कहा है–2

नाथ–पंथ या नाथ–सम्प्रदाय के सिद्ध–मत, सिद्ध–मार्ग, योग–मार्ग, योग–सम्प्रदाय, अवधूतमत एवं अवधूत–सम्प्रदाय नाम भी प्रसिद्ध हैं। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वे नाथ तथा सिद्ध सम्प्रदाय दोनों को एक ही मानते हैं।

नाथ पंथ की परम्परा में सर्वप्रथम आदिनाथ का नाम आता है।आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उन्हें शिव का रूप माना है। 3 आदि नाथ के शिष्य का नाम मत्स्येन्द्रनाथ था। ऐसी मान्यता है कि मत्स्येन्द्रनाथ जब नारी साहचर्य में अत्यधिक लिप्त हो गए,तब उनके शिष्य गोरखनाथ ने ही उनका उद्धार किया था। इस सम्प्रदाय में नाथों की संख्या नौ मानी गई है। इनमें मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, चौरंगी नाथ, जालन्धरनाथ आदि प्रमुख हैं।

नाथों में जिन्हें सर्वाधिक मान्यता, प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त हुआ उनमें गोरखनाथ सर्वोपरि हैं। डॉ नगेन्द्र तों नाथ साहित्य का आरम्भकर्ता ही उन्हें मानते हैं। उन्होने ही हठ योग का उपदेश देकर इसे नाथ पंथ का अनिवार्य अंग बना दिया। उन्होंने ही षट्–चक्र वाला योगमार्ग नाथ सम्प्रदाय में प्रचारित किया। उनकी रचनाएं कौन कौन सी हैं तथा उनकी संख्या कितनी है,इसमें पर्याप्त मतभेद है। डॉ पीताम्बर बडथ्वाल के अनुसार उनकी रचनाओं की संख्या 14 है, जिनमें सबदी, पद, प्राणसंकली, सिष्यादरसन आदि प्रमुख हैं। उनके उपरान्त अन्य नाथ–साधकों ने भी अनेक ग्रंथों की रचना की है परन्तु उनमें गोरखनाथ के भावों का ही अनुकरण किया गया है। 4 नाथ साहित्य में उनकी अनेक प्रवृत्तियां दिखाई देतीं हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है–

1. हठयोग–साधना पर बल
2. निवृत्ति मूलक विचार
3. नारी के प्रति उदासीनता
4. गुरु की महत्ता
5. मांस– मदिरा का विरोध
6. सदाचार एवं नैतिकता
7. शैव मत का प्रचार
8. बाह्य आडम्बर एवं पाखण्ड का विरोध
9. भाषा शैली

मुख्यतः उपरोक्त प्रवृत्तियां नाथ साहित्य में पाई जाती हैं।जिनका सविस्तार वर्णन इस प्रकार है–

1. हठयोगसाधना पर बल–

नाथसाहित्य में हठ योग की महत्ता प्रतिपादित है। इसके प्रवर्तक गुरु गोरखनाथ माने जाते हैं। हठ

योगियों के प्रसिद्ध ग्रंथ सिद्ध–सिद्धान्त–पद्धति के अनुसार ह का अर्थ है सूर्य तथा ठ का अर्थ है चन्द्रमा। इन दोनों को मिला कर हठ योग बना है। सम्भवतः इस में इडा पिंगला का ही भाव निहित है। हठयोगी अपने हठयोग के बल पर प्राणायाम की प्रक्रिया पूरी करता है। उसके बाद इडा सुषुम्ना के समीकरण से कुण्डलिनी को जागृत करता है। उसके बाद वह षडचक्रों का भेदन करता हुआ सहज दशा या समरसता को प्राप्त करता है। 5 गोरखनाथ ने इसी तथ्य को स्पष्ट किया है–

अवधू ईडा मारग चन्द्र मणीजै, प्यगुला मारग मान।
सुषमना मारग वाणी बोलिए, त्रिय मूल अस्थान।।

2 निवृत्ति मूलक विचार

नाथपंथी विचार धारा में सांसारिक भोगविलास एवं उपभोग की जगह उससे निवृत्त होने पर बल दिया गया है। इस मत के अनुसार गृहस्थ, संसार आदि बन्धनों के कारण हैं। अतः इनसे मुक्त हो कर ही मनुष्य अपनी साधना में लीन हो सकता है,ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। नाथपंथियों के अनुसार जब मनुष्य का मन तथा इन्द्रियां इस संसार के भोग–विलास से बंध जाते हैं तो उसकी मुक्ति नहीं हो सकती। संसार से मुक्ति के लिए मन में वैराग्य की भावना होनी आवश्यक है।वैरागी होने पर ही प्राणायाम में एकाग्रता आती है। वैराग्य से ही साधक बिना किसी रोकटोक के योग–साधना में तल्लीन रह सकता है। इस तरह नाथपंथ के मत के अनुसार निवृत्ति मूलक मार्ग को अपनाना चाहिए।6

भोगिया सूते अनहूं न जागे, भोग नहिं रे रोग अभागे।
बदंत गोरखनाथ आतमां विचारत, ज्यूंल स दीसै चंदा।।

3 नारी के प्रति उदासीनता

नाथपंथ सिद्धों की तुलना मे अधिक अनुशासित पंथ दिखाई देता है। सिद्धों में जो विकृतियां एवं अनैतिकता दिखाई देतीं हैं वे नाथों में कम दिखाईं देतीं हैं। नारी के प्रति सिद्धों का आचरण अत्यन्त विभत्स झांकी प्रस्तुत करता है। नाथों ने अपने पंथ में अधिक कठोर रूप धारण कर पारी को कामिनी कह कर उसकी निंदा मुक्त कण्ठ से की हे। उससे दूर रहने के लिए मनुष्य और साधक को सचेत किया है। स्पष्ट रूप से नारी को योगी की साधना में उसे बाधक माना गया है। नारी को पंथियों ने माया कहा है। ब्रह्मचर्य, संयम, इन्द्रियनिग्रह, आदि पर नाथपंथमें बल दिया गया हैं। गुरु गोरखनाथ नारी की निन्दा करते हुए लिखते हैं–

दिवसै बाघिणी मन मोहैं, रात सरोवर सोषै।
जानि बुझि रे मूरषि लोगै, घरिघरि बाघिनी पोषैं।। 7

4 गुरु की महत्ता

नाथपंथियों ने गुरु के महत्व को अपनी रचनाओं में मुक्त कण्ठ से प्रतिपादित किया है। नाथ पंथ के अनुसार ज्ञान प्राप्तिके लिए गुरु का होना अनिवार्य हैं। गुरु भी ऐसा जो पाखण्डी, ढोंगी न हो। गुरु ऐसा होना चाहिए जो अपने शिष्य को अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाए।गोरख नाथ ने गुरु के महत्व को इन शब्दों में प्रतिपादित किया है–

गुरु कीजै गहिला, निगुरा न रहिला।
गुरु बिन ग्यान न, पाईला रे भाईला।।8

5 मांस–मदिरा का विरोध

नाथ पंथ में मास और मदिरा का डट कर विरोध किया गया है। इससे पता चलता है कि सिद्धों की तुलना में नाथ पंथ में अधिक नैतिकता आ गई थी। उनके अनुसार मास मदिरा से मनुष्य तामसी प्रवृत्ति वाला हो जाता है तथा वह पंच विकार काम, क्रोध, लोभ मोह अहंकार आदि से बुरी तरह ग्रस्त हो जाता है।9 ये मनोविकार साधक की साधना में बाधक होते हैं। गोरखनाथ ने मास मदिरा की भर्त्सना करते हुए इन से दूर रहने की सलाह दी है–

अवधू मांस भषन्त दया धरम का नास।
मद पीवत तहां प्राणं निरास।
भांगि भषन्त ग्यानं ध्यानं षंवंत।
ज्म दरबारी ते प्राणी रोबंतं।।

6 सदाचार एवं नैतिकता

नाथ पंथ सदाचार के लिए जाना जाता है,यही प्रभाव आगे चलकर सन्तों की विचार धारा में दिखाई देता है। नाथ पंथ में सदाचार और नैतिकता पर विशेष बल दिया गया है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि साधक को ब्रह्मचर्य, का पालन करना चाहिए तथा मांस मदिरा का सेवन नहीं करना चाहिए।जीवन में सुख–दुख को समान भाव से ग्रहण करना चाहिए। अपने दृढ को स्थिर रखना चाहिए तथा सांसारिक भोग विलास में पडकर अपने चरित्र का नाश नहीं करना चाहिए। इनके अभाव में साधक एकाग्रचित होकर ध्यान नहीं कर सकता। 10

7 शैव मत का प्रचार

नाथपंथ में शिव की उपासना पर बल दिया गया है। उनके अनुसार शिव ही आदि नाथ थे। वे मानते हैं कि परम शिव की इच्छा से है शिव तथा शक्ति का जन्म हुआ। उसी से ही सृष्टि का विकास हुआ। उनके अनुसार शिव का धर्म शक्ति है और शिव के अभाव में शक्ति व्यर्थ हे। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।नाथपंथ के अनुसार शक्ति के तीन रूप हैं– 1 चित्त शक्ति 2 मायाशक्ति 3 जीवशक्ति। माया शक्ति जब जीव को अपने अधीन करके उसे दुखों के सागर में धकेल देती हैं तब जीव अपनी चित्त–शक्ति से शिव को प्रसन्न करके अपनी अपनी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता हैं।11 इस तरह नाथ पंथ में शैवमत का प्रतिपादन हुआ है–

चारिकला रवि की, जे ससि धरि आवै।
तो सिव सक्ति संमिहवै, अंत कोई न पावैं।।

8 बाह्य आडम्बर और पाखण्डों का विरोध

नाथ साहित्य में प्रत्येक बुराई का विरोध किया है जो साधक की साधना में बाधक प्रतीत होती हैं। नाथों ने इसी कडी में बाह्य आडम्बर, पाखण्ड आदि का विरोध किया है। उनके मत के अनुसार यदि मनुष्य का मन पवित्र है तो वह अपन योगसाधना के बल पर सहज दशा को प्राप्त कर सकता है। 12 अतः वे तीर्थ अटन मन्दिरों में मूर्ति पूजा आदि का विरोध करते हैं। वे तो मनुष्य के शरीर में ही सभी अठसठ तीर्थों का वास मानते हैं–

पंथि चलै चलि पवना लूटै, नाद बिंदु अरुझाई।
घट ही भीतरी अटसट तीरथ, कहां भ्रमै रे भाई।।

9 भाषा शैली

नाथसाहित्य की भाषा संध्या भाषा कहलाती है।यह भाषा उस समय बोली जाने बाली जनभाषा के समीप मानी जाती है।इस संध्या भाषा में मिश्रित अनेक भाषाओं अथवा बोलियों के शब्द समाहित हैं। 13 इसमें अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, पंजाबी, मगही, आदि अनेक भाषाओं के शब्द सम्मिलित हैं। नाथसाहित्य में भी सिद्ध साहित्य की तरह अनेक पारिभाषिक एवं सांकेतिक शब्दावली का प्रयोग किया गया है। पारिभाषिक शब्दों में नाद, बिन्द, इडा, पिंगला, शून्य, पिण्ड, सहज, सुरति आदि प्रमुख हैं।

नाथों ने जिन सांकेतिक या प्रतीक मूलक शब्दों का प्रयोग किया है उनमें गाय, मृग, हंस, आदि प्रमुख हैं। इन सांकेतिक शब्दों के माध्यम से उन्होने अपनी रहस्यानुभूति को अभिव्यक्त किया है।नाथ

पंथी अपनी स्पष्ट वादिता के लिए प्रसिद्ध हैं। 14 उनके काव्य में इसे स्पष्टता से देखा जा सकता है। इनके काव्य में कहीं कहीं व्यंग्यात्मक शैली भी देखी जा सकती है।

नाथपंथी साधक सीधी सपाट भाषा में बात करने के आदी थे, अतः उनके काव्य में अभिधा शब्द शक्ति ही मुख्यतः पाई जाती है। हां, जहां पर भी उन्होंने उलटबांसियों या प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है वहां पर लक्षणा शब्द शक्ति देखी जा सकती हैं।

नाथ पंथियों ने अपनी भाषा को अलंकारों से भी सजाने का विशेष प्रयास नहीं किया है, फिर भी उनकी रचनाओं में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, आदि मुख्य अलंकारों को नैसर्गिक रूप से उनके काव्य में देखा जा सकता है। 15 उनके काव्य में विरोधाभास अलंकार का एक उदाहरण देखिए–

उजड बेडा नगर मझारी, तालि गागरि उपर पनिहारी।
कामिनी जलै अंगीठी तापै, बिचि वैसन्दर थर थर कांपैं।।

इसी तरह नाथ साहित्य में अधिक छन्दों का प्रयोग तो नहीं हुआ है, फिर भी उनकी रचनाओं में साखी, सबद, रमैणी, सोरठा, चौपाई, आदि छन्दों का प्रयोग देखा जा सकता है।

सन्दर्भ सूचि

1. डॉ. नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 87
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य की भूमिका पृ. 37
3. उपरोक्त
4. डॉ. रामकुमार हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ. 34
5. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ56
6. डॉ. नगेन्द्र हिन्द साहित्य का इतिहास पृ 98
7. गोरखनाथ गोरखवाणी पृ67
8. उपरोक्त
9. डॉ. रामकुमार हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ. 120
10. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य की भूमिकापृ76
11. डॉ. नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 86
12. उपरोक्त पृ. 90
13. डॉ. भोला नाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ. 4
14. गुरु गोरख नाथ गोरखवाणी पृ. 34
15. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य की भूमिका पृ. 62